विचार बिन्दु

समय सबसे बड़ा चिकित्सक है, वक्त हर घाव का मरहम है। –कहावत

नव वर्ष का हो संकल्प, सब इंसान बनें

देखते-देखते एक वर्ष और बीत गया। 2022 को हमने अलविदा कह दी और 2023 में प्रवेश कर गए। प्रतिवर्ष नव वर्ष के प्रारंभ पर संकल्प लिए जाते हैं, जिनमें से अधिकांश को वर्ष के प्रथम माह में ही तोड़ दिया जाता है। इस बार भी लोग विभिन्न संकल्प लेंगे। कुछ ऐसे होंगे जिन्हें निभाया जाएंगे और कुछ ऐसे ,जो बीच में ही छोड़ दिए जाएंगे।

हम यदि समाज और देश की बात करें, तो यह विचारणीय है कि देश के नागरिक किस प्रकार का संकल्प लेकर इस समाज और देश को रहने के लिए अधिक बेहतर स्थान बना सकते हैं?

2022 में कोरोना के कहर से हम जैसे तैसे मुक्त हुए और जीवन सामान्य पटरी पर लौट आया। आर्थिक गतिविधियां प्रारंभ हुईं। जनजीवन सामान्य हुआ, आवागमन बढ़ा, पर्यटक भी बहुत बड़ी संख्या में भारत आए। राजस्थान में भी पर्यटकों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई, जिनमें विदेशी पर्यटक भी बड़ी संख्या में थे। राजस्थान के पर्यटक स्थलों में प्रमुख जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर में तो पाठकों को ठहरने के लिए स्थान तक नहीं मिला।

जैसे ही हमने 2022 को विदा किया, चीन में कोरोना की भयावह स्थिति के कारण भारत में भी कोरोना के पुन: दस्तक देने के समाचार मिलने लगे। इन्हीं आशंकाओं के बीच में हम 2023 में प्रवेश कर रहे हैं। सबसे पहला संकल्प या यूं कहें कि आकांक्षा है कि 2023 में देश कोरोना के प्रकोप से बचा रहे और जनजीवन सामान्य गति से निर्बाध रूप से चलता रहे। अब हम संकल्प की बात करें। मुझे लगता है कि सभी संकल्पों से श्रेष्ठ एवं उपयुक्त संकल्प यह होगा कि हम सब इस वर्ष इंसान बने रहें। पाठक कह सकते हैं कि इंसान तो हम हैं ही, इंसान बनने से क्या मतलब है? मेरा मानना है कि प्रकृति ने पुरुष या स्त्री तो बना दिया किंतु हममें से कई 'इंसान' नहीं बन पाते। अनेक बार हमारा हैवानियत का रूप देखने में आता है। मनुष्य कभी शैतान का रूप बन जाता है और कभी भगवान का। यदि हम भगवान नहीं बन सकें तो कोई बात नहीं, कम से कम शैतान तो न बने। यही मानवता के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होगा।

वर्ष 2021 में कोरोना की भयावहता के दौरान हमने देखा है कि किस प्रकार मनुष्य ने इंसानियत छोड़कर अपनी हैवानियत का परिचय दिया और प्रत्येक संभव तरीके से कष्ट में पड़े अपने साथी देशवासियों का शोषण करने से नहीं चूके। 2022 में रिश्ते भी बहुत तार-तार हुए। पिता-पुत्र, माँ-बेटी, प्रेमी-प्रेमिका ने कैसे एक-दूसरे की न केवल निर्मम हत्याएं कीं, अपितु इनके मृत शरीर के अंगों तक को काट कर फेंक दिया, इनका साक्षी 2022 बना।

हाल ही में जिस प्रकार से राजस्थान लोक सेवा आयोग और अन्य भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक होने के समाचार लगातार मिल रहे हैं, उससे तो यही लगता है जो लोग इस पेपर को आउट करने में संलिप्त रहे हैं, वे इंसान कहलाने के लायक तो कतई नहीं हैं। उसे इंसान कैसे कह सकते हैं जिन्होंने अपने स्वार्थ की खातिर लाखों युवाओं का भविष्य दांव पर लगा दिया। अधिकांश बेरोजगार युवा संपन्न परिवारों से नहीं आते । इनके पिता येन केन प्रकारेण कर्जा लेकर या अपनी भूमि को गिरवी रख कर पैसे का इंतजाम करके, उन्हें पढ़ाते हैं और उनकी कोचिंग की फीस का इंतजाम करते हैं। सुनने में तो यह भी आ रहा है कि जो भर्तियां हो चुकी हैं, उनमें भी पेपर लीक कराने अथवा फर्जी डिप्लोमा, डिग्री बेचने का काम धड़ल्ले से हुआ है। इस कारण भर्तियां उन्हीं लोगों की हुई जो दलालों को धनराशि उपलब्ध कराने में सफल रहे। बिना आवश्यक वांछित योग्यता के सरकारी नौकरी भी पा गए। इस काम में सरकार की शिक्षा के निजीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ने भी बहुत सहायता की है। अधिकांशत: जिन विश्वविद्यालयों की फर्जी डिग्रियां बेचने के समाचार मिल रहे हैं, वे सभी निजी क्षेत्र के हैं। इन विद्यालयों में सब कुछ होता है, शिक्षा प्रदान करने के अलावा। इस प्रकार के विश्वविद्यालयों से फर्जी डिग्री प्राप्त कर जो लोग नौकरी में आ जाएंगे, उनका पहला काम यही होगा कि जो लाखों रुपए खर्च किए हैं, वे शीघ्रतिशीघ्र वसूल करें। इस हेतु वे इंसानियत और अपनी नौकरी के कत्तर्व्य को त्याग कर, गरीब लोगों का शोषण ही करेंगे।

यदि हमें कुछ करना ही है तो हम किसी की सहायता करें, किसी भूखे के लिए भोजन की व्यवस्था करें, प्यासे के लिए पानी की व्यवस्था करें, किसी रोते हुए व्यक्ति के हम आंसू पोंछ लें, किसी बड़े-बुजुर्ग के साथ कुछ समय बिता लें। यह सब हम कर पाएंगे यदि हम मोबाइल पर बिताने वाले समय में से कुछ समय कम कर सकें। 2023 कई चुनौतियों वाला साल भी होगा।

मनुष्य द्वारा अपनी इंसानियत त्यागने के कई समाचार हम प्रतिदिन समाचार पत्रों में पढ़ते हैं, जिससे हमें स्वयं को इंसान कहने में भी शर्म आने लगती है।

उदाहरण के लिए हाल ही में दिल्ली और गुड़गांव में हुई उन घटनाओं के वीडियो वाइरल हुए जिनमें मकान मालिकों को अपने घरेलू नौकरों के साथ मारपीट करके हुए घर से निकालते हुए दिखाया गया। संभ्रांत परिवारों के लोग कैसे आपस में भिड़ गए और सिक्योरिटी गार्ड की पिटाई कर दी, इसके वीडियो भी वाइरल हुए हैं। ये लोग कोई झुग्गी-झोंपडी में रहने वाले नहीं, बल्कि बड़ी-बड़ी पॉश कॉलोनी में रहने वाले संपन्न परिवारों के व्यक्ति थे। हाल ही में थाई एयरवेज के वायुयान में जिस प्रकार भारतीय यात्रियों में सीट को सीधा करने के प्रश्न पर मारपीट हुई, उसने प्रत्येक भारतीय का सिर शर्म से झुका दिया।

हम एक-दूसरे के प्रति इतने असहिष्णु हो गए हैं कि हमने अपनी इंसानियत को ताक पर रख दिया है। जिस प्रकार दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को सड़क पर तड़पने के लिए छोड़ दिया जाता है और सैकड़ों वाहन वहां से निकल जाते हैं, उससे भी यही लगता है इंसानियत दुर्लभ होती जा रही है। शिक्षक द्वारा अंक बढ़ाने के नाम पर छात्रा का शारीरिक शोषण किया जा रहा है। कोचिंग संस्थाओं द्वारा वहां पढ़ाई कर रहे छात्रों पर पढ़ाई का अत्यधिक दबाव बनाकर, उन्हें मानसिक अवसाद में धकेल कर आत्महत्या करने पर मजबूर किया जा रहा है। राजस्थान के कोटा शहर में आत्महत्या की कई घटनाएं हाल ही में हुई हैं। यह सब वे नौनिहाल हैं, जिन्हें माँ-बाप ने बड़े कष्ट सहकर, इस आशा के साथ कोटा में कोचिंग करने हेतु भेजा था कि वह इंजीनियरिंग में प्रवेश लेकर बुढ़ापे में उनके जीवन का सहारा बनेंगे। लेकिन वह तो असमय ही उन्हें जीवन भर के लिए कष्ट भोगने हेतु छोड़कर दुनिया से विदा हो गए। क्या कोचिंग संस्थानों के मालिकों के अपने स्वयं के परिवार में बच्चे नहीं हैं? किस प्रकार अपने परिवार से अलग रह रहे बच्चों का मानसिक शोषण करने में वे एक बार भी नहीं सोचते? किस प्रकार केवल धन कमाने के लिए झूठे-झूठे वादे करके युवाओं को बरगलाया जाता है?

मान्यता है कि कई जन्मों के अच्छे कर्मों के पश्चात मनुष्य योनि प्राप्त होती है। इसके बाद भी यदि ये इंसानियत छोड़ दें, तो इसे हम क्या कहेंगे?

ऐसा व्यक्ति जो अपने ही जैसे मानव को किसी भी प्रकार से प्रताड़ित करने में, शोषित करने में अथवा उसकी हत्या तक करने से बाज नहीं आता, वह इंसान कहलाने के लायक तो नहीं हो सकता। 2023 में इतना तो कर ही सकते हैं कि किसी रिश्तो में यदि मधुरता न भी बढा सकें और किसी के साथ अच्छा व्यवहार न भी कर सकें तो कम से कम किसी के साथ कड़वा व्यवहार तो ना करें। यदि हम किसी के रास्ते को सुगम न बना सकें, तो हम उस में बाधा तो उत्पन्न ना करें। यदि हम किसी दूसरे के व्यक्ति के जीवन में उजियारा न कर सकें, तो कम से कम अंधकार करने का माध्यम तो न बनें।

यदि हम किसी व्यक्ति को स्वस्थ न रख सकें, तो उसे बीमार रखने का निमित्त तो न बनें। यदि हम माता-पिता की सेवा न कर सकें और यदि हम किसी का हाथ पकड़ कर न चल सकें, तो किसी पकड़े हुए हाथ को मझधार में तो न छोड़ दें। यदि हम किसी को ज्ञान दान न कर सकें, तो किसी को फर्जी डिग्री बेचने का काम तो ना करें। यदि हम किसी को घर बनाकर ना दे सकें, तो किसी का घर तोड़ कर उसे सड़क पर लाने का काम तो ना करें।

बस, हम इतना भी कर लें, तो फिर हम शायद इंसान कहलाने लायक तो रहेंगे। यदि देश के सब नागरिक तय कर लें कि वह देवत्व का भाव उत्पन्न न कर सकें किंतु शैतान बनने से बच सकें और इंसानियत का धर्म निभाएं, तो इस देश को उन्नत देश बनाने में अपना योगदान देंगे। वैसे इंसान बनना इतना कठिन भी नहीं है। बस, केवल इसके लिए अपने स्वार्थ एवं लोभ को वश में रखने की आवश्यकता है। पैसा कमाना बुरी बात नहीं है, लेकिन उसके लिए दूसरे की लाश पर पांव रखकर आगे बढ़ना कुछ ठीक नहीं। जीवन में आगे बढ़ना गलत बात नहीं है, लेकिन साथी को गिरा कर आगे बढ़ना तो अच्छी बात नहीं है।

आइये, हम 2023 में नया संकल्प लें हैं कि, हम कोई ऐसा काम ना करेंगे, जिससे हम किसी के जीवन में कष्ट पैदा करने का माध्यम बनें। यदि हमें कुछ करना ही है तो हम किसी की सहायता करें, किसी भूखे के लिए भोजन की व्यवस्था करें, प्यासे के लिए पानी की व्यवस्था करें, किसी रोते हुए व्यक्ति के हम आंसू पोंछ लें, किसी बड़े-बुजुर्ग के साथ कुछ समय बिता लें। यह सब हम कर पाएंगे यदि हम मोबाइल पर बिताने वाले समय में से कुछ समय कम कर सकें। 2023 कई चुनौतियों वाला साल भी होगा। इन चुनौतियों का मुकाबला हम तभी कर पाएंगे जब हम अपनी इंसानियत को संभाल कर रखेंगे और साथी इंसान को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाएंगे। तब ही देश के सभी नागरिक एक-दूसरे के दुख-दर्द में साझेदार बन कर, एक-दूसरे की प्रगति में भागीदार बनेंगे, तब ही सब इंसानियत का धर्म निभाने वाले माने जाएंगे और तब ही हमारा देश कहीं अधिक सहकार वाला, सद्भाव वाला, भाईचारा वाला, घृणा रहित, प्रेम से परिपूर्ण देश बन पाएगा।

यह कल्पना साकार हो सकती है, यदि हम केवल एक प्रण लें कि वर्ष 2023 में हम इंसान बन कर रहें और इंसानियत के धर्म का पालन पूर्णतया प्रण-प्राण से करें।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

''मरांग गोमके'' जयपालसिंह मुण्डा : एक बहुआयामी व्यक्तित्व

19वीं सदी में बिरसा मुंडा तथा 20वीं सदी में जयपालसिंह मुंडा दो ऐसी हस्तियां हुई जो अपने जीवन काल में ही लोकगाथा बन गई। एक 'धरती आबा' तो दूसरे 'मरांग गोमके' के नाम से प्रसिद्ध हुए। बिरसा मुंडा की शहादत की आग बुझी भी नहीं थी कि प्रमोद पाहन नामक बच्चे का जयपालसिंह मुण्डा 'मरांग गोमके' (महान नेता) के रूप में उदय हुआ। जयपालसिंह का जन्म 3 जनवरी, 1903 को अमरू पाहन एवं राधामणि के यहां पाहनटोली गावं टकरा, रांची में हुआ। जयपालसिंह का प्रारंभिक नाम प्रमोद पाहन था। बालक जयपालसिंह को प्राईमरी शिक्षा के लिए टकरा के संत पाल उच्च प्राथमिक विद्यालय में भर्ती कराया गया। यहां जयपालसिंह ने अपने गुरू लुकास से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। विद्यालय समय के पश्चात घर पर जयपालसिंह गाय व बकरियों को चराने तथा घोड़ों को नहलाने का काम भी करते थे।

प्रारम्भिक शिक्षा के बाद जयपालसिंह के पिता ने उनका रांची के सेन्ट पॉल स्कूल में दाखिला कराया। रांची के स्कूल में जयपालसिंह पर ईसाई धर्मगुरू व शिक्षक कैनन कोसग्रेव का जबरदस्त प्रभाव पड़ा। जयपालसिंह स्कूल के सबसे मेधावी छात्र थे और वे पढाई के साथ-साथ खेलकूद में भी उत्कृष्ट थे। कोसग्रेव को जयपालसिंह में गजब की नेतृत्व क्षमता दिखाई दी। यहां जयपालसिंह व कैनन कोसग्रेव में गुरू-शिष्य के प्रगाढ संबंध बन गये थे। गुरू-शिष्य की बढती नजदीकियों से जयपालसिंह की मां खुश नही रहती थी क्योकि उनको आशंका रहती थी कि कहीं मेरा बेटा आदिवासी मूल्यों से ना कट जाये। सन् 1918-19 में सैंटपाल स्कूल रांची के प्राचार्य कोसग्रेव सेवानिवृत होकर इंग्लैंड लौटे तो वे अपने प्रिय छात्र जयपालसिंह को भी अपने साथ इंग्लैंड ले गये और उच्च शिक्षा के लिए उनका दाखिला इंग्लैंड के प्रतिष्ठित सेन्ट ऑगस्टीन महाविद्यालय में करा दिया लेकिन जयपालसिंह की असाधारण प्रतिभा को देखते हुए महाविद्यालय के विशप नाइट ने दो टर्म बाद ही इनको 40 पौन्ड की स्कॉलरशिप पर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, लंदन के प्रतिष्ठित सेन्ट जान्स कॉलेज में भेज दिया। जयपालसिंह पूरे एशिया से अकेले विद्यार्थी थे जो ऑक्सफोर्ड के हॉस्टल में रहते थे। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सैंटजॉन्स कॉलेज, लंदन से जयपालसिंह ने अर्थशास्त्र ऑनर्स में स्नातक एवं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में गोल्ड मेडल के साथ स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। जयपालसिंह सैंटजॉन्स कालेज की फुटबॉल टीम के सदस्य थे। इसके साथ ही वे सैंटजॉन्स कॉलेज तथा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की हॉकी टीम के भी सदस्य थे। सन् 1924 ई. से 1926 ई. तक आक्सफोर्ड विवि लंदन की हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व किया। जयपालसिंह ने 'इकोनोमी ऑफ स्पोर्टस' पर शोध कार्य किया।

1924 ईस्वी में हॉकी में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के खिलाफ आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की जीत में जयपालसिंह के योगदान के कारण उन्हें 'हाकी ब्ल्यू' से सम्मानित किया गया। हॉकी के प्रति जयपालसिंह का जूनून इस स्तर का था कि लंदन व ब्रिटेन में अध्ययनरत भारतीय विद्यार्थियों की हाकी टीम तैयार कर टीम को लेकर बेल्जियम, स्पेन, फ्रांस व जर्मनी के विश्वविद्यालयों में लेकर जाते और मैच जीतने पर भारत की प्रशंसा होती। हॉकी के वे इतने लोकप्रिय खिलाडी हो गये कि तत्कालीन समय की प्रतिष्ठित मैगजीन 'वर्ल्ड हॉकी' में इनका प्रोफाइल छपा। सन् 1926 में ये आक्सफोर्ड की बजाय विम्बलडन क्लब के लिए हाकी खेल रहे थे। भारत में खेल संघ से जुड़े कर्नल ब्रूस टर्नबुल एवं मेजर रिकेट्टस ने जयपालसिंह के पास आकर उन्हें भारतीय हॉकी टीम का नेतृत्व करने का आग्रह किया। जयपालसिंह का सन् 1927-28 ई. में प्रतिष्ठित आईसीएस में चयन हो गया था और उस समय ये आक्सफोर्ड में आईसीएस का प्रशिक्षण ले रहे थे। उल्लेखनीय है कि जयपालसिंह प्रथम भारतीय थे जिनको आईसीएस के साक्षात्कार में 300 अंक में से 300 अंक प्राप्त हुए। जयपालसिंह ने एमस्टर्डम ओलंपिक में भाग लेने के लिए अनुमति हेतु इण्डिया ऑफिस लंदन को प्रार्थना पत्र दिया जिसे निरस्त कर दिया गया। जयपालसिंह ने अवकाश स्वीकृत नही होने के बावजूद निजी हितो के बजाय राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी ओर उन्होने भारतीय हॉकी टीम का कप्तान बनना स्वीकार किया। भारतीय टीम पानी के जहाज से 30 मार्च 1928 को ब्रिटेन पहुंची। जयपालसिंह मुंडा ने उनको रिसीव किया। भारतीय टीम ने वहां कई अभ्यास मैच खेले। पहले अभ्यास मैच में भारतीय टीम ने इंग्लैंड की टीम को चार-शून्य से हराया एवं दूसरे ही मैच में प्रतिद्वन्दी टीम को 18-0 से हराया। जयपालसिंह द्वारा डीप डिफैंडर के रुप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर तत्कालीन समाचार पत्र ''स्टेटसमैन'' ने एक पूरा कॉलम लिखकर जयपालसिंह के प्रदर्शन की प्रशंसा की। यद्यपि जयपालसिंह का भारतीय टीम के एंग्लो-इण्डियन खिलाडियों एवं टीम प्रबंधन से नस्लीय भेदभाव के मुद्दे पर विवाद होने के कारण ये फाईनल मैच में नही खेले फिर भी एमस्टर्डम ओलंपिक में भारत ने हॉकी में अपना पहला गोल्ड मैडल जीता।

सन् 1928 में जयपालसिंह कलकत्ता आ गये और मोहन बागान फुटबॉल क्लब के प्रबंधन से जुड गये। भारत में जयपाल सिंह कलकत्ता में रॉयल डच-शैल कम्पनी में मर्केंटाईल असिस्टेंट के पद पर नियुक्त किये गये। उस समय उनका वेतन आईसीएस से भी ज्यादा होता था तथा किसी अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी में इतना उच्च पद पाने वाले ये प्रथम भारतीय थे। इसी दौरान उन्होंने व्योमेश चन्द्र बनर्जी की पोती तारा मजूमदार से विवाह किया। कम्पनी में अपने सहकर्मियों द्वारा भेदभावपूर्ण व्यवहार के कारण उन्होने यह नौकरी भी छोड़ दी और कैनन कोसग्रेव से मिलने लंदन चले गये।

कुछ समय बाद जयपालसिंह ने अचिमोटा कॉलेज, पश्चिमी अफ्रीकी देश घाना में एक शिक्षक के पद पर कार्य किया। अफ्रीका में भी उन्होंने खेलों में बहुत से पुरस्कार जीते। अफ्रीका में उनको भारत के शिक्षा सचिव गिरिजा शंकर बाजपेई का तार मिला जिसमें उन्हें रायपुर के राजकुमार कॉलेज में प्राचार्य के पद पर नियुक्ति हेतु प्रस्ताव था। इस कालेज में केवल राजकुमार एवं अंग्रेज अफसरों के बच्चे ही पढते थे। यहां भी जयपालसिंह को नस्लीय भेदभाव का सामना करना पडा और उनका स्थानान्तरण बीकानेर रियासत में उपनिवेशन मंत्री एवं राजस्व आयुक्त के पद पर किया गया। जयपालसिंह की प्रशासनिक योग्यता से प्रसन्न होकर महाराजा बीकानेर द्वारा उन्हें पदोन्नत कर विदेश मामलों का सचिव बनाया गया। के. एम. पन्निकर ने उनकी नियुक्ति का पंजाब के मुख्यमंत्री श्री सिकंदर हयात खान के माध्यम से विरोध किया। अत: जयपालसिंह बीकानेर रियासत को छोडकर कश्मीर के महाराजा हरिसिंह की सेवा में चले गये।

बिहार के गर्वनर मॉरी हालैट एवं मुख्य सचिव रोबर्ट रसैल की सलाह पर जयपालसिंह ने आदिवासी आंदोलन के साथ राजनीति की शुरूआत की। आदिवासी नेताओं बन्दीराम ओरांव, पॉल दयाल, इग्निश बैक, थियेबल ओरावं, थियोडोर सूरीन, जूलियस टिग्गा आदि के आग्रह पर जयपालसिंह 20 जनवरी 1939 को आदिवासी सभा के अध्यक्ष बने। इन्होंने आदिवासी सभा को आदिवासी महासभा में परिवर्तित किया। आदिवासियों को नस्लीय भेदभाव से मुक्त करने हेतु संघर्ष किया। जयपालसिंह अलग झारखंड राज्य की स्थापना के लिए चलाये गये आंदोलन के संस्थापक भी थे जिसका उद्देश्य आदिवासी अधिकारों और उनके क्षेत्रों का पुर्ननिर्धारण करना था। इसके पश्चात वो लगातार आदिवासी अधिकारों के लिए लडाई लडते रहे। आदिवासियों में जन-जागरूकता पैदा करने हेतु जयपालसिंह ने सन् 1940 में 'आदिवासी सकम' नाम से समाचार पत्रिका प्रकाशित की। इन्होंने मजदूर वर्ग के लिए 'आदिवासी लेबर फेडरेशन' एवं 'पूअर लेबर एसोसिएशन' की स्थापना की। सन् 1946 में जयपालसिंह को संविधान सभा में बिहार से स्वतंत्र सदस्य के रूप में चुना गया। संविधान सभा में जयपालसिंह ने आदिवासियों के अधिकारों के लिए कार्य किया। 11 दिसम्बर 1946 को संविधान सभा में सभापति के अभिनन्दन भाषण पर आदिवासियों के प्रतिनिधि की हैसियत से बोलते हुए कहा कि 'भले ही हम यहां केवल पांच हैं लेकिन हमारी संख्या कई लाख है और हम भारत के वास्तविक मालिक हैं'। 19 दिसम्बर 1946 को लक्ष्य संबंधी प्रस्तावों पर भारत के आदिवासियों की ओर से बोलते हुए जयपालसिंह ने कहा कि 'मुझे गर्व है कि मैं एक जंगली हूँ यही नाम है जिससे कि हम अपने देश में पुकारे जाते हैं। यदि भारत वर्ष में कोई समूह है जिसके साथ घटिया व्यवहार किया गया है तो वह आदिवासी समूह है। गत 6000 वर्षों से उनकी उपेक्षा की गई है और उनके साथ अनादरपूर्वक व्यवहार किया गया है'। जयपालसिंह ने महिलाओं के अधिकारों की वकालत करते हुए कहा कि 'विधान परिषद में बहुत से पुरूष हैं, परन्तु हम चाहते हैं कि विधान परिषद में नारी बल की समानता हो।' -श्रीमती वियजलक्ष्मी पंडित के सदृश स्त्रियाँ जिसने कि इस जाति विशिष्टता का संहार कर अमेरिका में विजय पा ही ली।

डॉ. दुलीचंद मीना

जयपालसिंह ने आदिवासियों की अनेक समस्याओं का न्यायोचित हल की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि ''प्रांतो की सीमाओं का साहसपूर्वक पुनरांकन करने से यह समाधान संभव है। जयपालसिंह नें ब्रिटिश पश्चिम अफ्रीका से वापस लौटने के बाद आदिवासियों को जानने के लिए आदिवासियों के बीच आदिवासी क्षेत्रों में 1,14,000 मील का सफर किया था। जयपालसिंह ने कहा कि भूमि आदिवासी जीवन का आधार है।

राष्ट्रीय पताका संबंधी प्रस्ताव पर बोलते हुए जयपालसिंह ने कहा कि आदिवासी झंडा फहराने में और अपने झंडे के लिए युद्ध करने में सर्वप्रथम है। यह राष्ट्रीय झंडा आदिवासियों को एक नया संदेश देगा कि स्वतंत्रता के लिए उनका 6 हजार वर्षों का युद्ध अन्त में समाप्त हो गया है और वे अब इस देश में उतने ही स्वतंत्र है जैसे कि अन्य व्यक्ति। अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए जयपालसिंह ने कहा कि ''1935 के एक्ट के अनुसार भारत की सारी प्रांतीय धारा सभाओं के 1585 सदस्यों में से आदिवासियों के केवल 24 सदस्य ही थे, जबकि केन्द्र में एक भी नहीं था। वयस्क मताधिकार से निश्चित रूप से बड़ा फर्क पड़ेगा। उन्होने देशी रियासतों को भी आदिवासियों को प्रतिनिधित्व देने का सुझाव दिया।

जयपालसिंह ने अनुच्छेद 13(1) ख अर्थात शांतिपूर्ण आयुध सम्मेलन के प्रस्ताव पर बोलते हुए कहा कि आदिवासी लोग धनुषबाण, लाठी, कुल्हाडी, बेला धारण करते हैं लेकिन इन सबका उद्देश्य अशांति स्थापित करना नही होता हैं। अत: इनको आयुध नहीं माना जावे। 2 दिसम्बर 1948 को संविधान सभा में डॉ.अम्बेडकर संशोधन संख्या 491 के माध्यम से 'आदिवासी' शब्द के स्थान पर 'अनुसूचित' शब्द रखना चाहते थे। इस पर जयपालसिंह ने डॉ.अम्बेडकर से सवाल किया जिसका डॉ.अम्बेडकर ने सभा में विस्तृत जवाब दिया। अनु. 23 अर्थात भाषा, लिपि एवं संस्कृति के प्रस्ताव पर जयपालसिंह ने कहा कि ''जिन भाषाओं की अपनी लिपि नहीं हैं उनके भी संरक्षण की आवश्यकता हैं तथा ऐसी भाषाएँ जो सहस्त्र वर्षों बाद भी सजीव हैं उन्हें उन्नत बनाया जाए तो उनके द्वारा भूतकाल के कई विषयों के संबंध में शिक्षा दी जा सकती है।''

जयपालसिंह ने सन् 1950 में आदिवासी महासभा के जमशेदपुर अधिवेशन में आदिवासी महासभा को 'झारखंड पार्टी' नाम के राजनैतिक दल में परिवर्तित किया। सन 1963 में झारखंड पार्टी का कांग्रेस में विलय हो गया। जयपालसिंह स्वतंत्र भारत के प्रथम आदिवासी थे जो बिहार के उपमुख्यमंत्री बनाए गये। जयपालसिंह 1952 से चार बार लगातार सांसद रहे। इनकी मृत्यु दिनांक 20 मार्च 1970 को हुई। इन्होंने आजीवन आदिवासी हितों के लिए संघर्ष किया और उनकी मृत्यु के लगभग 30 वर्ष बाद 15 नवम्बर, 2000 को पृथक झारखंड राज्य की स्थापना होने से उनका संघर्ष पूर्ण हुआ।

इस प्रकार जयपालसिंह सेन्ट जोन्स कॉलेज, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, लंदन के आसाधारण छात्रों में से एक थे जो भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से, शारीरिक और बौद्रिक रूप से एक असाधारण छात्र, एक शिक्षक और औपनिवेशिक प्रशासक, एक उत्कृष्ट खिलाडी, एक दृढ निश्चयी राजनेता, स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, ओजस्वी वक्ता तथा भारत के आदिवासी एवं स्वदेशी लोगों की मुखर आवाज थे जिन्होंने आदिवासी हितों के लिए आजीवन संघर्ष किया।

–डॉ.दुलीचंद मीना,
आर. ए. एस.

चायनीज़ मांझे से बॉर्न आउल (उल्लू) घायल

फुलेरा, (निसं)। कस्बे में चाइनीज मांझे से घायल होने वाले पक्षियों की सूची में विलुप्त होती दुर्लभ प्रजाति के बॉर्न आउल(उल्लू) का नाम भी जुड़ गया है।

■ **डब्लूसीओ ने रेस्क्यू कर उपचार कराया**

डब्लूसीओ के संस्थापक ओमप्रकाश सैन ने बताया कि ढीण्ढा निवासी मनोज कुमावत ने बॉर्न आउल के घायल होने की सूचना पशु-पक्षी व पर्यावरण संरक्षण में कार्यरत संस्था वाइल्डलाइफ क्रिएचर ऑर्गेनाइजेशन को दी। जिस पर टीम तुरंत मौके पर पहुंची और संस्थापक पीन्टी ने टीम के सदस्य रोशन कुमावत के साथ बॉर्न आउल का रेस्क्यू कर निरिक्षण किया तो पाया कि उसके बांए पंख कि मुख्य हड्डी टूट चुकी थी और बाएं पैर में भी चोट लगी हुई थी। जिससे उसका पैर पूर्ण रूप से सक्रिय नहीं था। इसके बाद आउल को फुलेरा के राजकीय पशु चिकित्सालय लेकर आये जहां पर वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी राज सिंह शेखावत ने उसका प्राथमिक उपचार किया।

उपचार के बाद उसे पीपली का बास स्थित नर्सरी में वन अधिकारी (नाका इन्चार्ज) श्याम शर्मा के सुपुर्द कर दिया। वहीं पीन्टी ने बताया कि उक्त उल्लू विलुप्त होती हुई दुर्लभ प्रजाति का है। इसे खलिहान उल्लू के नाम से भी जाना जाता है तथा चूहे, छिपकली, छोटे सांप, छोटे पक्षी एवं मृत जानवर इसकी भोजन श्रृंखला में आते हैं।

घायल उल्लू का प्राथमिक उपचार करते डॉ. राज सिंह शेखावत।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 3 जनवरी, 2023

पौष मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि 10:02 तक, शुभ योग बुधवार प्रात: 7:06 तक, बव करण प्रात: 9:13 तक, चन्द्रमा वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से सांय 4:26 तक है। महापात योग दिन 12:20 से सांय 7:45 तक है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:56 से 11:13 तक, लाभ-अमृत 11:13 से 1:48 तक, शुभ 3:06 से 4:24 तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:41

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार सम्पन्न बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। घर-परिवार के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।